दैनिक
राष्ट्रीय प्रस्तावना
गाँव से गवर्नेन्स तक

लखनऊ, रायबरेली, इलाहाबाद, आजमगढ़, झांसी, एटा, औरैया, अमेठी, बलरामपुर, फतेहपुर, बांदा, उन्नाव, लखीमपुर, मुरादाबाद, कन्नौज, बाराबंकी, सीतापुर, जौनपुर, श्रावस्ती, उरई, जालौन, फिरोजाबाद, हरदोई, मथुरा, कानपुर, ललितपुर, गोण्डा, सहारनपुर, सिद्धार्थनगर, सन्तकबीरनगर, जोयडा सहित प्रदेश के समस्त क्षेत्रों में बहुप्रसारित

वर्ष : 8 अंक 316 | लखनऊ, शनिवार, 8 जून , 2019 | पृष्ठ : 8 | मूल्य : 2.00

पर्यावरण संरक्षण संगोष्ठी सम्पन्न

गोमती नगर जनकल्याण महासमिति की उपखण्ड विराम-5 व स्कूल ऑफमैनेजमेन्ट साइन्सेज, लखनऊ के तत्वाधान में 'विश्व पर्यावरण दिवस (5 जून, 2019) पर एक संगोष्ठी का आयोजन 'बसन्ती पार्क' में किया गया, जिसमें नगर के सम्मानित व्यक्तियों ने अपनी सहभागिता की और पर्यावरण असन्तुलन को रोकने तथा 'वायु प्रदूषण' के विषय में विशेष रूप से चर्चा की तथा अपने-अपने सुझाए दिए। इस संगोष्ठी के संयोजक डॉ0 भरत राज सिंह, वरिष्ठ पर्यावरणविद् व सलाहकार, जनकल्याण महासमिति; महानिदेशक, स्कूल ऑफ मैनेजमेन्ट साइन्सेज, लखनऊ थे तथा मुख्य अतिथि पूर्व कैबिनेट मंत्री श्री गोरख प्रसाद निषाद तथा अध्यक्ष, जनकल्याण महासमिति व होमियोपैथिक निदेशालय के अध्यक्ष, डा0 बी0एन0सिंह, अध्यक्ष विराम-5 कल्याण समिति, श्री जी0एन0सिन्हा व सचिव, श्री आर0एस0मिश्रा, खण्ड प्रभारी, श्री राकेश जेटली, श्री राम दयाल मौर्या व श्री आर0पी0शुक्ला के अलावा बड़ी संख्या में लोगो ने भाग लिया। बैठक में निम्न सुझाव दिए गये।

1. प्रकृति के साथ बच्चों को जोड़ने व पेड़-पौधों व हरियाली के फायदे से, अभिभावको द्वारा उन्हें अवगत कराया जाय।
2. पर्यावरण को बचाने की सतर्कता के लिए वैदिक काल के ग्रन्थों का अध्ययन व अनुसरण किया जाय।
3. वृक्षो के रोपण को अधिक से अधिक कर, उसे जीवित रखने के लिए सम्बन्धित लोगों को जोड़ने का प्रयास किया जाय।
4. नई-सड़कों (एक्सप्रेस वे, राष्ट्रीय मार्गो, राज्यमार्गो आदि) के निर्माण के पूर्व, उनके दोनों तरफछायादार व फलदार वृक्षों को अवश्य लगाया जाये जिससे निर्माण-पूर्ति तक यह उपयोगी भी हो सके।
5. पानी के संरक्षण के लिए पार्को व खुली जगहों पर यथा सम्भव रिचार्ज की व्यवस्था की जाय।
6. पार्को तथा वाहनों की खुली-पार्किंग स्थलों पर, अण्डर-ग्राउण्ड-तालाब, जिनकी तलहटी पक्की न हों, बनाए जाये जिससे कालोनी आदि के बारिश के पानी को एकत्रित होकर रिचार्ज की व्यवस्था हो सके और बारिश का पानी सीधे नाली के द्वारा नदी में न पहुँचे।
7. पुराने काव्य-लेखों 'विज्ञान-शकुन्तलम' आदि पर प्रचार किया जाय, जिससे पर्यावरण संरक्षण जीवन का अंग बन सके।
8. पानी का चिड़काव के उपरान्त ही, सड़कों की सफाई, निर्माण कार्य सामग्री आदि का उपयोग किया जाय, जिससे वायु प्रदूषण कम हो।
9. घरों की छतों को सफेद पेन्ट कराया जाय जिससे घर के तापमान में 5-7 डिग्री की कमी आ सके और ऊर्जा की बचत हो।
10. घर के छतों पर 'सौर-ऊर्जा के पैनल अधिक से अधिक लगाकर विद्युत-उपयोग किया जाय तथा देहात में सौर ऊर्जा पम्प लगाए जाए।
11. घर के लान को पक्का न कर यथा सम्भव ग्रीनरी लगाई जाय।

उक्त उपायों से यह सम्भव है कि आने वाली सदी में हम आगामी पीढ़ी के बच्चों के लिए धरती को हरा-भरा करके जीवन को खुशहाल करने में कारगर हो सकेगे अन्यथा आज की वर्तमान स्थिति में समुद्री तूफनों, ओलावृष्टि, भूकम्प, पृथ्वी के तापमान में हो रही बढ़ोत्तरी, जो इस वर्ष 50 डिग्री सेन्टीग्रेड पारकर गयी है और 2050 तक 53 डिग्री तक पहुँचने के आसार है, से नकारा नहीं जा सकता है। वायु प्रदूषण पी0एम0 2.5 की मात्रा, भारत के 49 शहरों में चार से छ गुना बढ़ चुकी है व विश्व में सबसे अधिक है, जिससे बच्चों व बुजुर्गो में दमा, सांसो की बीमारी, हृदय रोग आदि से मृत्युदर में अप्रत्याशित वृद्धि हो रही है। अकेले चीन व भारत में ही प्रदूषण की विभीषिका से 50 लाख से अधिक लोगों की मृत्यु प्रतिवर्ष हो रही है। बच्चों में पर्यावरण सुरक्षा के प्रति अधिक ज्ञान देने हेतु, उनको प्राथमिक कक्षा के पाठयक्रम में जोड़कर चित्रों के माध्यम से जानकारी देने हेतु पुस्तके तैयार की जाये। तभी 'पेड़ लगाओ जीवन बचाओ' का नारा कारगर होगा।